IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

दक्षिण भारतीय प्रारंभिक ग्राम संस्कृति के उदय एवं विकास का स्वरूप

Manjay Kumar Paswan

Research Scholar,

Department of History, Lalit Narayan Mithila University, Darbhanga - 846004

सारांशरू दक्षिण भारत में प्रारंभिक ग्राम संस्कृतियों के उदय एवं प्रसार की जानकारी पराविदो के देर से होने लगी है। सुप्रसिद्ध प्रागैतिहासज्ञ वी०जी० चाइल्ड का अनुमान रहा है कि ष्भोजन सग्रहण से खाद्यानोत्पादन (ैंअंहमतल जव ठंतइंतपेउद्ध का उदय सिर्फ शिकारी जीवन में खाद्य संकट से ही नहीं कि मध्य पाषाण काल के उच्च शिकारी जीवन का अन्त और नवपाषाण क्रान्ति (छमवजपजीपब त्मअवसनजपवदद्ध का उदय सर्वनूतन कल्प की शुरूआत (आज से लगभग 10.12 हजार वर्ष पूर्व) से मौसम (जलवायु) के छः चक्र की स्थापना तथा नदी द्रोणियों के निर्माण से ग्रामीण संस्कृति की उदयए असार और उद्विकास संभव हुआ था। सबसे बड़ी बात यही हुई कि शिकारियों में यह समझ और सोच उत्पन्न होने लगी थी कि प्रकृति के छट्टा दोहन से उसका संरक्षण और पोषण से उसके लिये प्रकृति के भंडार के क्षय होने की जगह सदा - वृद्धि होती रहेगी और आवश्यकता की पूर्ति में अभाव नहीं खटगेगा। अतः कृषि और पशुपालन ग्राम संस्कृति की रीढ़ के रूप में उद्विकसित हुआ था। पशुपालन में चारागाह का मैदान बदलना पड़ता थाए किन्तु कृषि - की भूमि अपने कर्मियों के अपने से वांधे रखने के चलते स्थायी आवास के रूप गाँव को जन्म दिया था। ब्इस तरह पूरी सृष्टि में नवपाषाणिक कृषि क्रान्ति से ग्रामीण संस्कृति के उदय और प्रसार की शुरूआत सभी प्रख्यात प्रागैतिहासज्ञ मानते हैं।

परिचय

भारतीय उपमहाद्वीप में दक्षिण भारत भूतात्त्विक दृष्टि से सबसे प्राचीन भूखण्ड होने के बावजूद नदी द्रोणियों का जमाव गोदावरी के नीचे कृष्णाए तुंगभद्रा और कावेरी की घाटियों में अधिक पाया जाता है। इसलिये इसी घाटी में कर्नाटक के सोरापुर दोआव से लेकर आध्रप्रदेश

के दक्षिणी-पूर्वी भाग तथा । केरल तमिलनाडू के उपरी भाग से नवपाषाणिक कृषक गाँवों की संस्कृति के अवशेष पाये गये है। वे उत्तर भारत की तुलना में आद्य तरह के प्रतीत होते हैं और उनकी अधिक से अधिक कालावधि 1500.1000 ई० पू0 के बीच आंकी गयी है। ये शुरूआती दौर की कृषक वस्तियाँ पहाड़-पठार के ढ़लान तथा पहाड़ की तलहरी में पाये गये हैं। दक्षिण भारत में सही अर्थ में ग्राम संस्कृति की कृषि सह पुशपालन तथा मृदभांड और कृषि के औजार वाली थोड़ी विकसित तथा जटील आर्थिक-सामाजिक और धार्मिक स्वरूप वाला ग्राम सस्कृतियाँ महाशम कव संस्कृति (डमहंसपजीपब ज्वउइ ब्नसजनतमद्ध के प्रसार के सगय से ज्ञात हुआ है। इसमें कहीं-कहीं ताम्बे के उपयोग के साथ पाषण लघु उपकरण और कृषक औजारों की अधिकता तथा कहीं-कही पाषाण औजार की अधिकता के बीच लौह औजारों का अल्प संख्या में उपयोग का प्रमाण हाथ लगा है। अतः दक्षिण भारत में नवपाषाणिक कृषक वरितयां उत्तर भारत की तुलना में कगजोर और थोड़ा पर से उचित और प्रसारित होता नजर आता है। इसमें भी वी0 जी0 चाइल्डए ई0 एम0 स्वीलरए अलाचिन श्पात आदि दक्षिण भारतीय गहाशा कब्र की संस्कृति को श्रागुन्द्र के रास्तें दक्षिण यारोप से आया माने थे अब स्वतंभोतर कालीन भारत की ;बिंबव सपजीपब ब्सजनतमद्ध जाजर आता हा ण्व कालीन भारतीय पुरातात्विक खोज से स्थापित हो गया है कि दक्षिण भारतीय महाश्ग का गों के निर्माता उत्तर भारत से ही विध्या वार में इस संस्कृति का विकास और प्रसार किये थे। अत: भारतीय ग्राम संस्कृतियों का स्त्रोत उत्तर भारत ही रहा था। . उत्तर भारत में ग्रामीण वस्तियों की संस्कृति के विकास और प्रसार में तान पाषाण संस्कृति की सबसे बड़ी भूमिका पायी गयी हैए वहां दक्षिण भारत में इसकी भूमिका की बहनगीरी (कर्नाटक) आदि के ग्रामिण संस्कृति के निर्माण में गौण दिखती है। महाराष्ट्र को दक्षिण पामिल कर लेने पर नर्मदा तथा ताप्ति के आरपार जोर्चे की संस्कति के गाँव विकसित होत नजर है जिन के कृषि औजार और मृद भांड़ पर दक्षिण भारतीय ग्राम संस्कृति से अधिक मध्य भारत की पाम संस्कृति का प्रभाव अधिक दिखता है। किन्तु महाराष्ट्र की जोर्चे गाँव गोदावरी की सरिता तंगभद्र के उत्तर ही धनीभूत पायी गई है उसका प्रसार गोदावरी के नीचे और पूरब में नहीं होता ज्ञात हुआ है। अतः ताम्रपाषाण काल (प्रथम सताब्दी के आस-पास) दक्षिण भारत के गाँव का स्वरूप अद्यौतिहासिक र आता है।

साहित्यिक समीक्षा

दक्षिण भारत की ग्रामीण संस्कृति का प्रारंभिक विकसित स्वरूप की जानकारी दक्षिण भारतीय महाश्म कब्र की संस्कृति की अवशेषों की प्राप्ति हुई है। यह संस्कृति एक विचित्र तरहं के.शवाधान से जुड़ा हुआ है। अतः इसकी इस विशेषता के कारण इसे कब्र के स्वरूप के नाम से पुकारा जा रहा हैए जबकि इस संस्कृति के लोगं कृषक सह पशुपालक होते थे और किसी न किसी प्रकार के प्राकृतिक जल स्त्रोत जैसे झीलएझरनाएसरिता आदि के किनारे बाँस-बल्लियों के सहारे गोलाकार झोपड़ीनुमा आवास बनाते थे। इनके कब्र सात-आठ प्रकार के पाये गये। यह एक दूसरे से इतने भिन्न पाये गये हैए कि प्राचीन कब्रों के विशेषज्ञ मानते हैं कि यह अलग अलग कुल गोय का रहा होगाएजो अलग-अलग गाँव में रहते पाये गये है और गाँव से दूर किन्तु दृष्टि की सीमा में उँची स्थान (छोटी पहाड़ी तथा उँची पठार) पर प्रत्येक गाँव के कब्रगाह बनाये पाये गये है। इन कब्रों पर वर्षी (अपभ्रंस में वी) मनाने की रिवाज का प्रावधान को पुराविदो ने खोज निकाला है। इस ग्राम संस्कृति की कालावधि 800.200 ई0 पू0 के बीच आंका गया है। अतः जिस तरह उत्तर भारत में प्रथम सहस्रादी ई0 पू0 के पुर्वाद्ध में आनार्य तथा आर्यों की वस्तियां फैल रही थीए उसी समय दक्षिण भारत में भी नवपाषाणिक कृषक. की वस्तियों से अधिक महाश्म कब्र वाली वस्तियां भी फैल रही थी। कई नृविज्ञानिकों ने महाश्म कब्र से प्राप्त कंकालों के परीक्षण से यह मानने लगे है कि महाश्म कब्र के लाग से ही दक्षिण भारत में द्रविड़ जाति और उसकी संस्कृति का उदविकास हुआ था। दूसरी और यरोप के देशों से महाश्म कब्र संस्कृति की जो जानकारी मिली हैए और वहां उसकी कालावधि द्वितीय सह श्ह साब्दी इ0 पूर्व के मध्य के आस-पास आंकी गयी है। ऐसी स्थिति में दक्षिण भारतीय महाश्म कब्र के लोग कहीं उनके संतान रहे होगेए तो इसकी संभावना बढ़ जाती है कि उत्तरी पूर्वी यूरोप से आर्य लोग मध्य एशिया होते हुए ईरान से भारत में प्रवेश कर यहां के अनार्यों से संगम कर एक नई संस्कृति की शुरूआत किये थेए कति के लोग भी ईरान और सिंध के मैदान से होते हुए मध्य भारत पाश्चमी दक्षिण यरोप से महाश्म संस्कति के लाग मा स दक्षिण की ओर प्रसार कर वहां के नवपाषाणिक कृषकों से समागम कर द्रविड़ संस्कृति को जन्म दिये थ। पार्यों में दाह संस्कार के बाद वचे अस्थि अवशेष पर चैत्य जिसे वौद्धों ने स्तूप का नाम दिया था। के विधान इस ओर पूरा इसारा करते हैए कि हर किन्तु भारत में प्रवेश कर इन साना तथा महाश्म कब्रों में शबों को सिर्फ अस्थि-अवशेष का शवाधाम तथा दोनों में वर्षी का ग दसारा करते हैए कि इन दोनो के पूर्वज भी किसी ब्वउउवद वतपहपद के लोग रहे होगए . परेश कर इन दोनों के काल

परिस्थिति के अनुरूप दो भिन्न संस्कृतियों का विकास किया उत्तर भारत की उर्वरक भूमि आर्यो को अनार्थ तथा दस्यु से समागम कर तेजी से कृषिए शिल्पए व्यापार न शहरीकरण की ओर बढ़ने में सहयोगी रहाएवहीं दक्षिण में इस सुविधा के अभाव में महाश्म कब्र संस्कृति – साहित्य के काल (ई0 पू0 200द्ध तक फैला हुआ ज्ञात होता है।

जिस समय दक्षिणी भारत पर मौर्य का आधिपत्य कायम हुआ थाए उस समय महाश्म न वहां प्रचलित थीए और दक्षिण में कवीला तंत्र इस समय भी कायम था। अशोक के अभिलेख में एवं मध्य भारत के कई जनजातियों का नाम आया हैए जिसमें दक्षिणी भारत में आंध्रए रट्ठीकए लीक केरलए चोलए चेरए सतियपुत्रए प्रमुख थे। जिस में अन्तिम चार मौर्य साम्राज्य से बाहर थे। अतः ये लोग कावेरी के दक्षिण में समुन्द्र तटीय क्षेत्र में वसे होगें। मौर्यों के प्रशासन तंत्र के दकन में फैले जनजातिए

खट के आधार पर गाँव और मुहल्ला में बंटे थे तथा अपने जेष्टक (कुल श्रेष्ट) के अन्दर सामूहिक ... वामित्व वाली आजीविका के स्त्रोत का उपयोग करते थे। इसलिए कई पीढ़ी तक लोग संयुक्त परिवार में रहते थे। व्यक्तिगत स्वामित्य का प्रचलन नहीं हो पाया था। इसलिए संयुक्त परिवार बहुत बड़ा होने पर . चुल्हा बंटने लगा थाए किन्तु संयुक्त परिवार की सम्पत्ति साथ रहता था और प्रत्येक बंटे चुल्हे में खाना खाने वालों की संख्या के आधार में खाद्यान. का बंटवारा कुल तथा खुंट प्रधान किया करता था। सामूहिक सम्पत्ति . के बंटवारां में अनियमितता के चलते संकट उत्पन्न हुआ। अतः भागवान (कवीला के सामुहिक उपज एवं अन्य सम्पत्ति में अपने सदस्यों का हिस्सा बांटने वाला) भाग्यवान (सरदार द्वारा हिस्सा निर्धारित करने वाला) होने के चलते हिस्से के बंटवारा में अनियमितता आयी थी। इसके चलते सामूहिक सम्पत्ति का बंटवारा से । संयुक्त परिवार भंग होने लगा। इससे कवीला भी विघटित विद्यारित होने लगा। यह काम उत्तर भारत में । ऋऋऋ प्रारंभिक सूत्र काल। 600.400 ई0 पू0 में होने का प्रमाण मिलता हैए वहीं काम दक्षिणं भारत में मौर्य आधिपत्य के काल (320.180 ई0 पू0द्ध में होना शुरू हुआ। इसमें मौर्य शासन तंत्र की भी भूमिका रही थी .. कि उसके कुल–खुंट के प्रधान को भूराजस्व वसूलने का अधिकार देए सरदारी तंत्र की ओर बढ़ने में मदद – किया था। ऐसी प्रक्रिया से आंध्र जाति में सातवाहन (सात घोड़ों के रथ पर चढ़कर युद्ध करने वाला) और रढीको के बीच महारठठीक (महाराष्ठ) का उदय हुआ था। यही प्रक्रिया कावेरी के दक्षिण कर्नाटकएकेरल और तमिलनाड में भी चोलचेर आदि जनजातियों के बीच होने लगा। जनजाति. सरदार बड़े भूस्वामी . (वल्लाल) होने लगे और कवीले के अन्दर बड़ी संख्या में भूमिहीन होने लगा ।इस तरह सामूहिक सम्पत्ति

वाला कवीला तंत्र समाप्त और व्यक्तिगत सम्पत्ति के स्वामित्व वाला सरदारी तंत्र की शुरूआत हो गयी। फलतः दकन से लेकर सदर दक्षिण में फैले पाण्ड्यए चेरए चोल आदि सभी जनजातियों के समाज में लागू हुआ और ग्राम समुदाय का स्वरूप बदलने लगा। इससे सगोत्रीय विवाह परम्परा की जगह वहिर्गामी विवाहः . प्रथा प्रचलित होने से अन्तर जाति संबंध और रश्म-रिवाज बदलने लगा। इससे दक्षिण भारत की ग्राम संस्कृति का रूप बदलने लगा और उसमें भूमिवान और भूमिहीन के बीच के रिस्ते से नया ग्राम संस्कृति ली और पहाडी क्षेत्र में जनजाति कवीला तंत्र कायम रहा। पनपने और फैलने लगी।

सातवाहन काल दक्षिण भारत के इतिहास में राजतंत्रीय विकास और प्रसार का काल रहा त सातवाहन राज्य की प्रकृति मौर्यो की तरह केन्द्रीकृत राज्य से भिन्न तथा उसकी सत्ता में सरदारों भागीदारी से खडित सम्प्रभुता के युग की शुरूआत होने से दक्षिण भारत की ग्राम व्यवस्था भी प्रभावित होने लगी थी। गाँव वालाल (भूमिवान) और वेल्लाल (भूमिहीन) में विभाजित हेने लगा। गाँव भी भूमि की अनसार गरीब-धनी में बंटने लगा था। महाश्म संस्कृति के लोग पहाड़ी के तलहटी क लैया के पास बसते थे और नवपाषाणिक कृषक उंची भूमि पर। किन्तु सातवाहन काल में लोग नदी की ओर फैलने लगे थे। इस समय खेती में लोहा के उपकरण का अधिक उपयोग से उपज में बुद्धि हलगी थी। हल वैल से खेती की विधि प्रचलित होने से कृषि क्षेत्र के प्रसार से गाँवों का प्रसार भी शुरू हो गया था। फिर भी इस समय पाँच प्रकार के गांवों का प्रमाण मिलता है। पहाड़ की तलहटी और जंगल के अन्दर बसे गाँव कुरिनजी कहलाता था। ये गाँव छोटे तथा विखरे होते थे। चारागाह के मैदान तथा यंडमंट वाले क्षेत्र के गाँव मुतलैई कहलाते थे और यहाँ अधिकांश पशुपालक निवास करते थे। कुरिजनी और मुतलैई में खेती अल्प होती थी। अतः यह निर्धन और पिछड़ा हुआ गाँव होता था। सबसे उपजाऊ भूनि वाला गाँव मरूतम कहलाता था। इसमें ही बड़े-बड़े भूस्वामी और कृषक होते थे। यह गाँव बड़ा और घनी किसानों का होता था। ऐसे गाँव नदी घाटी में फैले थें। समुन्द्र तटीय गाँव को नेयटाल कहलाता था। इसमें मछुआ .लोग निवास करते थे। इस तरह दक्षिण भारत में विविध प्रकार के गाँव और उसकी जीवन शैली विकसित होने लगी थी।

बड़े गाँव में हलवाहा. (उजहवार) तथा भूस्वानी (बल्लाल) रहते इनके खेतीहर मजदूर . वेल्लाल कहलाते थें। इनके दो समूह होते थे। एतियोर और विनैवलार । ऐतियोर दास होते थे और विनैवलार दैनिक मजदूर होते थे। छोटे और मझौले परिवार के सदस्य खेती में लगे रहते थे। किन्तु बड़े भूत्वामी की खेती गुलाम और दैनिक मजदूर से होती थी। । सातवाहनों के

काल (150ई0 पू0 से 200 ई0 सन तक) में ब्राहम्ण और बौद्ध धर्म का प्रसार होने से दक्षिण भारत का आर्यकरण शुरू हुआ। फलतः उत्तर मस्तीय सामाजिक व्यवस्था दक्षिण में फैलने लगी। सतवाहन तथा उनका सहयोगी योद्धा समुदाय क्षत्रियश और उनका पुरोहित श्ब्राहम्णष कहलाने लगा। वहा भी वैश्य समाज में किसान शिल्पी और व्यापारी का सामाजिक वर्ग पैदा होने लगा। शुरू में भूमिहीन पल्लालार भी गलाम और दैनिक मजदर में विभक्त हो गये थे। बड़े गाँव गोदवरी की निचली घटी हिंदराबाद से दक्षिण) और कष्ण कावेरी की घाटी में फैले थे। ऐसे गाँव को ष्उरष कहा जाता थाए जिसका स्वामी सरदार होता था और गाँव वाले उन्हें भूराजस्व अदा करते थे। सरदार तथा उसका महाप्रभु इसका संग्रह करता था। वह भराजस्प को धार्मिक संस्थान को दान देने लगा था। फलतः सातवाहनों के शासन सामन्ती व्यवस्था उदीत होने लगा था और गॉव भूस्वामी और रैयत में काल के उत्तरार्द्ध से दक्षिण भारत में सामन्ताश बंटना शुरू हुआ।

सुदूर दक्षिण में पाण्डयएचेर.चोल आदि जनजातियों के अन्दर से सरदारी तंत्र दकन की तरह पदा लेने लगा था। इस तरह सातवाहनों के पतन के बाद (300 ई०) से लेकर दकन में वकाटकों और पमिलहम प्रदेश (केरल और तमिलनाडु) में पाण्ड्यए चर. आर. पाल स रा चेर औरए चोल के सरदारों के शासन काल में सरदारी के उदय से सागन्ती समाज व्यवस्था के अन्दर ग्रामीण समुदाय और संस्कृति का विकास दस शोध प्रबंध में दक्षिण भारत के इसी ग्राम समुदाय और संस्कृति का अध्ययन होना हैए कि दक्षिण भारत में ग्राम संस्कृति से राजतंत्र और सामन्ती तंत्र उत्तर भारत से थोडा भिन्न तरिके से विकसित हुआ था। पर्व अध्ययन-दक्षिण भारत के इतिहास पर सबसे पहले नीलकंठ शास्त्री की पुस्तक प्रकाशित हुई।

इतिहास के अध्ययन पर ही. जोर डाला जा रहा था ।दक्षिण भारत का प्रागातहास म राना पाषाण के अतिरिक्त जानकारी नहीं के बराबर हुई थी। अतः दक्षिण भारत में कृषकं गाँव के विकास के बारे में प्रागैतिहासिक आधार की जानकारी नहीं हो पा रही थी। अशोक का ब्राहमीरी और मास्की (दोनों न कर्नाटक में) से घम्मलेख की प्राप्ति से यह जाना जाने लगा कि मौर्यो के समय में दक्षिण भारत में जनजाति कवीला समाज का विघटन और उसमें सरदारी तंत्र (बिपजिंदजीपचद्ध का उदय होने लगा था और यहीं सरदार दकन में सातवाहन राजवंश के रूप में उदीत हुआ थाए जिन्हे महाराष्ट्र और गुजरात पर आधिपत्य के लिए पश्चिम भारत के शकक्षमप से संघर्ष करते रहना पड़ा था। अतः याज़दानी द्वारा सम्पादित दकन का इतिहास में सरदारी तंत्र से राजतंत्र के उदय प्रसार का अच्छा अध्ययन मिलता है। सूदूर दक्षिण जिसे अब कुछ इतिहासकारं श्तमिल हम क्षेत्रष का नाम देना शुरू किये हैए में पाण्ड्यए चेरए चोलए जैसे मौर्य

कालीन जनजाति में सरदारी तंत्र और उसे राजतंत्र के उदय और प्रसारर का अध्ययन बलराम श्री बास्तबत की पुस्तक श्दक्षिण भारत के इतिहासष में मिलता हैए किन्तु इसमें भी दक्षिण भारत में ग्राम संस्कृति जो किसी भी भूखण्ड में सभ्यता के विकास और प्रसार की पहली मंजिल होती हैए के बारे में अल्प संकेत दिया गया है।

1944 ई0 से दक्षिण भारतीय महाश्म का संस्कृति के गाँवों का अवशेष दकन से लेकर सुदूर दक्षिण भारत तक पहाड़ के ढलानए झीलए तलाब और नदी की सरिता तथा पहाड़ झरना के पास पाये गये है। यही लोग दक्षिण भारत के अधिकांश जनजातियों में विकसित हुए थे और इन लोगों की चर्चा संगम - कविता तक पाया गया है। मौर्य और सातवाहनों के समय गाँवों का प्रसार नदी द्रोणी में अधिक हुआए जिसे ष्उरष के नाम से पुकारा जाता रहा है। इस तरह जंगल-पहाड़ की तालहटी में जनजातिय गाँव और नदी-द्रोणी में धान की खेती वाले विकसित गाँव फैलते रहे। अतः जनजाति गाँव का अध्ययन नहीं हो पाया है। अतः इस शोध प्रवधन का उद्देश्य प्रारंभिक दक्षिण भारतीय ग्राम संस्कृति के उदयं और विकास का अध्ययन करना है।

शोध प्रबंध के अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध प्रबंध का मुख्य उद्देश्य दक्षिण भारतीय ग्राम संस्कृति के उदय और विकास के स्वरूप का अध्ययन करना है। इसके संबंध में विगत दशकों में दक्षिण भारत में नवपाषाणए ताम्र-पाषाण तथा महाश्म कब्र संस्कृति (जिससे दक्षिण में लोह के उपयोग के प्रचलन की जानकारी हुई है) से ग्राम संस्कतियों के उदय और विकास की जानकारी काल क्रम के साथ भौगोलिक पारवश के साथ होना शरू हुआ है। अतः पुरातात्विक जानकारी को ऐतिहासिक क्रम में सजान और दक्षिण के गाँवों के जनजातिय चरित्रक के जनजातिय चरित्रके ऐतिहासिक कारकों को खोजना है।

भरत के इतिहास के ज्ञान में योगदान- इसे भारत के इतिहास में डान में यह डे डोना है कि दसे भारत में गाँवों की प्रकृति जनजातिय रह गयाए जबकि उसो कालाध में उत्तर मन्त में कबीले न सरदारी तंत्र तोडप महाजनपदो राजतंत्र ने नोयों के समय एक विकसित एवं केन्द्रीय कृत दौर चल गया था. वैसा दक्षिण भारत में नहीं हो पाया। सावदाहनों ने जिस राजतंत्र का ऋ कास किया था. उसकी प्रवृति उत्तर भारतीय राज्य से भिन्न क्यों रहा। वहाँ जरदारी तंत्र से शासन का उदय ई० सन् के 150 से शुरू हुआए किन्तु उससे अधिक उत्तर भारत में सामन्ती जत्था अधिक क्यों विकसित हुआ था। जिस नध्य काल से दकन के नाम से पुकार जाने लगा थाए भी शामिल करना है के गोदावरी की निकली घाटी और कृष्ण कावेरी का दोआव आंघ

प्रदेष के कृषको ने तो कर्नाटक का नगर दोलाव नहाराष्ट्र के कृषको के प्रसार से ग्रान संस्कृति को दिकासित करने में नददगार हुए थे। अतः सदर दर्दन को दकन ते जोड़ कर ग्रान संस्कृति का अध्ययन करेंगे। इसकी कालवधि प्रारंन से छटी ताजो तक रखा जा रहा है कि छठी शताब्दी से चालुक्यए पल्लबए चोल आदि राजवंश का उद्य शुरु होने लगाए खड़ दक्षिण भारत में ब्उरष् किसान शिल्पियो की वस्तिया) आर्थिक सामाजिक सशक्त इकाई के रूप . में ही नहीं स्थानीय प्रशासनिक इकाई के रूप में स्थापित हो गया था। अतः छडी ज्ञाताब्दी तक के मन विकास से अध्ययन में शामिल किया गया है।

परिकल्पना

इतिहास मे परिकल्पना साक्ष्य के साधार पर बनती है। दक्षिण भारत का एक अच्छा खासा हिस्ता आदिवासी (इवतहपदंसद्ध और जनजातियों (जतपइंसद्ध बना हुआ है। ये दक्षिण में ग्रान संस्कृति के विकास के क्रम में पुराना गाँवो का अवशेष के रूप में बचे हुए है। अतः दक्षिण भारतीय गाँव को स्थिति जानने के लिये दक्षिण में ग्राम संस्कृतियों के विकास को प्रारंन से अन्वेशन करना आवश्यक है।

अध्ययन की पद्धतिः

इस शोध प्रबंध की सध्ययन पद्धति गत्तनानक होगी। पुराविदो ने दक्षिण भारत ने नवपाषाणिकए ताम्रपाषाणिक और मलश्म कब्र संस्कृति के गांवों अवशेषो की खोज किये है। इन तीनों संस्कृति के काल क्रम में ही दक्षिण भारत के गाँव और उनकी संस्कृतिया अपने अपने ढंग से . विकासित हुई है। इन तीनो संस्कृतियों तं तीन तरह के गाँव का विकास के वाबजूद दक्षिण के जगल और पहाड़ की तलहटी में भोजन संग्रहक समुदाय बचा रहा। इन तीनों संस्कृति के जगह-जगह समन्व से मौर्य काल में विकसित जनजाति और आदिवाशी के स्वरूप को खोजने के लिये अशोक के अनिलेखों में वर्णित वाला की पहचान स्थापित करने के लिये महाश्म कब्र के ग्रामों से मिलान बैठाना है।

अध्ययन सामग्री की उपलब्धता

इस शोध प्रबंध की अध्ययन सामग्री की उपलब्धता पर्याप्त रूप में का भारत के नवपाषाणएताम्रपाषाण और महाश्म कब्र संस्कृति के पुरास्थानों के उत्खलन रिपीट मित है। यह सब जी० डी० कॉलेज के पुस्तकालय और काशी प्रसाद शोध संस्थानएपटना तथा रेट ऑफ

आर्केयोसॉगी बिहार सरकारएपटना के पुस्तकालय में उपलब्ध है। फिर दक्षिण भारत के इतिहास पर प्रकाशित पुस्तकें भी उपलब्ध है।

उपसंहार

दक्षिण भारत के जनजातियों के विघटन में अशोक के धम्म महामात्रों की भूमिका को खाजना है। मौर्य प्रशासन के काल में जनजातिय प्रधानों की प्रशानिक सेवा में लिये जाने से उनके बीच सरदारी तंत्र के उदय के कारको को दूढना है। दकन में सातवाहन और सूदूर दक्षिण में पाण्ड्य.चेर चोलों के सरदारी तंत्र के उदय तथा उस समय दक्षिण की कृषि योग्य भूमि के अनुसार इसमें वसे गाँवों के स्वरूप निवारण करना है। सरदारी तंत्र के अधीन बल्लाल (भूमिवान) तथा वेल्लालार (भनि विहीन) के बीच जन के कारको को आंकना है। इसमें पुरातात्विक अवशेषों और तमिल साहित्य के प्रारंभिक रूप संगम लताओं का सहारा लेना है। इस तरह पुरातात्विक साक्ष्यों के अवशेष तथा उपलब्ध साहित्यिक साधनों मलान करना है। साथ ही दक्षिण भारत के आर्यकरण की भूमिका तथा दक्षिण में वर्ण तथा जाति के रूप को स्थापित करना है।

संदर्भ सूची:

1ण ब्रिजेट अल्चिन दम्पति-द राजइज ऑफ सिविलाइजेशन इन इंडिया एण्ड पाकिस्तान-नई दिल्ली -1993

2ण ब्रिजेट अल्चिन दम्पति-ओरिजिन ऑफ ए सिविलाएजेशन-दिल्ली-1997ए

3ण डी0 पी0 अग्रपाल-द आर्कियोलॉजी ऑफ इंडिया-1982

4ण एफ0 आर0 अल्विन-द आर्कियोलॉजी ऑफ अर्जी हिस्टोरिक साउथ एशिया-कैम्ब्रिज-1995ए

5ण डी0 के0 चक्रवती-द आर्कियोलॉजी ऑफ एंशिएण्ट इंडिया-दिल्ली-1995

6ण एम0 के0 धवलीकर-द फर्स्ट फार्मर्स ऑफ डेकन-पूणा-1988ए

7ण एच0 डी0 संकलिया-प्री हिस्ट्री एण्ड प्रोटो हिस्ट्री ऑफ इंडिया एण्ड पाकिस्तान-पूणे-1974

8ण डी0 आर0 दास-इकोनोमिक हिस्ट्री ऑफ दकन-दिल्ली-1969ए

9ण ए0 घोष-एन इनसाइक्लोपिडिया ऑफ इंडियन आर्कियोलॉजी-दो खण्ड-1989.दिल्ली

10ण रोमिला थापर-द मौर्याज रिविजिटेड-कलकत्ता

11ण्श्रिसेंट पर्सष ऐक्टिम ऑफ अर्लीइण्डिया-मुम्बई-1995

12ण एच0ण पी0 राय–मोनास्टरी एण्ड गिल्डएकामर्स अण्डर द सातवादनाज–दिल्ली–1986

13ण्डी0 डी0 कोसाम्वी–भारतीय सभ्यता और संस्कृति का अध्ययन–दिल्ली–1980

14ण्डी0 एन0 झा–रेपेन्यू सिस्टम इन द पोसट मौर्याज़ एंड गुप्ता ठाइम्स–कलकत्ता–1963

15ण्रोमिला थापर–वंशगौंभ्स से राज्य तक–दिल्ली–2002ए

16ण नीलकंठ शासत्री––हिस्ट्री ऑफ साउथ इंडिया–मद्रास–1957

17ण वलराम श्री वास्तव–दक्षिण भारत का इतिहास–दिल्ली–1972

18ण्याजदानी (सं0द्ध.दकल का इतिहास–बम्बई–1969

19ण्ई0 एम0 हवीलर––ब्रह्मगीरी इस्केमेशन–एंशिएष्ट इण्डिया वेलेहीन न0.4.दिल्ली––1945ए

20ण वी0 के थापर–नियोलिथिक भिलेजेज इन इंडिया एण्ड पाकिस्तान–दिल्ली–1986ए

21ण्राधकान्त वर्मा–भारतीय प्रागैतिहासिक संस्कृतियांए

22ण ए0 सुन्दर–द अर्ली चेम्बर टोम्परा ऑफ साउथ इण्डिया–दिल्ली–1979ए 23ण्जी0 आर0 शर्मा–विगनिंग ऑफ एग्रीकलचर इन इण्डिया–इलाहाबाद–1980

24ण वी० पी० सिन्हा–पोटरीज इन एंशिएण्ट इण्डिया––पटना–1969ए 25ण्एस0 एच0 पेटर–द वुक ऑफ इंडियन एनिमल्स–बम्बई–1965

26ण एम0 एस0 नागराज–द स्टोन ऐज हिल डुलर–ऑफ दनक–पुना–1965एए 27ण वाई जसपाल–रोक आर्ट ऑफ केराला दिल्ली–1998

28ण एस0 वी0 देव–प्रोवलेम्ब ऑफ साउथ इण्डियन मेगालिथा–धारबार (कर्नाटक) –1973

29ण्आर0 सी0 मजुमदार एवं अलतेकर–द गुप्त–वकारक ऐज–मुम्बई–1958ए

30ण्सी0 डी0 देशपाण्डे–रिजनलीरी इन साउथ इंडियन हिस्ट्री–दिल्ली–1992